अध्याय 37

अय्यूब को एलीहू की अपील (भाग 2)

अध्याय 37 में परमेश्वर की सामर्थ का विवरण जारी रहता है। ''इन आयतों में एलीहू के भाषण की उत्तमता केवल दाऊद के मण्डरा रहे एक और तूफ़ान की गरज में यहोवा की आवाज के विवरण से मिलाई जाती है (भजन संहिता 29)।''[1]

''आकाशमण्डल परमेश्वर की महिमा की घोषणा करता है'' (37:1-13)

[1]''फिर इस बात पर भी मेरा हृदय काँपता है, और अपने स्थान से उछल पड़ता है। [2]उसके बोलने का शब्द तो सुनो, और उस शब्द को जो उसके मुँह से निकलता है सुनो। [3]वह उसको सारे आकाश के तले, और अपनी बिजली तक भेजता है। [4]उसके पीछे गरजने का शब्द होता है; वह अपने प्रतापी शब्द से गरजता है, और जब उसका शब्द सुनाई देता है तब बिजली लगातार चमकने लगती है। [5]परमेश्वर गरजकर अपना शब्द अद्भुत रीति से सुनाता है, और बड़े बड़े काम करता है जिनको हम नहीं समझते। [6]वह तो हिम से कहता है, पृथ्वी पर गिर, और इसी प्रकार मेंह को भी और मूसलाधार वर्षा को भी ऐसी ही आज्ञा देता है। [7]वह सब मनुष्यों के हाथ पर मुहर कर देता है, जिस से उसके बनाए हुए सब मनुष्य उसको पहचानें। [8]तब वनपशु गुफाओं में घुस जाते, और अपनी अपनी माँदों में रहते हैं। [9]दक्षिण दिशा से बवण्डर और उत्तर दिशा से बिखेरनेहारों से जाड़ा आता है। [10]परमेश्वर की श्वास की फूँक से बरफ पड़ती है, तब जलाशयों का पाट जम जाता है। [11]फिर वह घटाओं को भाप से लादता, और अपनी बिजली से भरे हुए उजियाले का बादल दूर तक फैलाता है। [12]वे उसकी बुद्धि की युक्ति से इधर उधर फिराए जाते हैं, इसलिये कि जो आज्ञा वह उनको दे, उसी को वे बसाई हुई पृथ्वी के ऊपर पूरी करें। [13]चाहे ताड़ना देने के लिये, चाहे अपनी पृथ्वी की भलाई के लिये या मनुष्यों पर करुणा करने के लिये वह उसे भेजे।''

आयत 1. ''फिर इस बात पर भी मेरा हृदय काँपता है, और अपने स्थान से उछल पड़ता है।'' आने वाली आंधी में परमेश्वर की सामर्थ के जबर्दस्त प्रदर्शन पर विचार करते हुए एलीहू आदर और भय से भर गया। खुले आकाश में रहने वाले लोगों ने दूर से अपनी ओर तेज आंधी के आने के इस बल को देखा है।

आयतें 2-5. इन आयतों में आंधी के वायु मण्डलीय प्रदर्शनकर्त्ता को दिखाया गया है। आदर से भरे प्रभाव को पाने के लिए शब्दों का दोहराव, शब्दों का फेरबदल और विषयों के अदल बदल का इस्तेमाल किया गया है। इस बात पर ज़ोर देते हुए कि **गरजने** की आवाज **परमेश्वर**

की ओर से आती है, **शब्द** शब्द का इस्तेमाल छह बार मिलता है (देखें भजन संहिता 29)। इन आवाज़ों को **उसके बोलने का शब्द** जो उसके मुंह से निकलता है कहा गया है। यह शब्द **अदभुत रीति से प्रतापी शब्द** है। परमेश्वर के **गरजने** (37:2, 4, 5) की जगह **चमकने** शब्द ले लेता है (37:3, 4)। **सारे आकाश के तले** और **पृथ्वी की छोर तक** वाक्यांशों के द्वारा उसके जबर्दस्त तूफ़ान के प्रभाव दूर तक जाता है। वास्तव में परमेश्वर **बड़े बड़े काम करता है जिनको हम नहीं समझते**।

इस तूफ़ान के सम्बन्ध में ऐल्बर्ट बारनस ने टिप्पणी की है:

> बहुतों के द्वारा यह मान लिया गया है, और यह बिना अनुमान के नहीं है कि यह अंधड़ पहले ही उठा हुआ दिखाई दिया गया था जिसमें से परमेश्वर ने अय्यूब [अध्याय 38] से बात करनी थी, और यहां पर एलीहू अपने सुनने वालों से आ रहे तूफ़ान की ओर विशेष ध्यान देने और दूर से तूफ़ान के बुदबुदाहट की ओर विशेष ध्यान देने के लिए कह रहा है।[2]

आयत 6. एलीहू ने परमेश्वर के **हिम** तथा **मेह** को आज्ञा देने के विवरण से आगे बात की। जॉन ई. हार्टले ने लिखा है, ''फलस्तीन की पहाड़ियों में कई बार सर्दी की बारिश बर्फ गिरने में बदल जाती है। *मूसलाधार वर्षा* अचभिंत कर देने वाली है और कभी-कभी दिखाई देने वाली *हिम* उससे भी अधिक अचंभित करने वाली है।''[3]

आयत 7. हिम तथा मेंह भेजकर परमेश्वर मनुष्य को उसकी ईश्वरीय प्रभुता पर विचार करने को विवश करता है। **वह सब मनुष्यों के हाथ पर मुहर कर देता है**, जिसका कारण यह है कि सर्दी में बर्फ़ और बारिश गिरने पर खेतीबाड़ी की हर गतिविधि बंद हो जाए। लोगों को गीले और सर्द मौसम से दरवाजों के अंदर धकेल दिया जाता है।

आयत 8. बर्फ और बारिश से मनुष्यों के अलावा जानवर भी प्रभावित होते हैं। वे सर्दी की निष्क्रियता से सुरक्षा की तलाश में रहते हैं। विलियम डी. रेबर्न ने लिखा है, ''वन पशु सामान्य अर्थ में जंगली *वनपशु* के लिए कहा गया है 5.23; 39.15; 40.20. *गुफाओं* यह क्रिया शब्द पर आधारित एक संज्ञा शब्द है जिसका अर्थ है 'घात लगाना।' इसका अर्थ एक गुप्त स्थान है जहां जानवर नज़र से छिपकर रहता है।''[4] **गुफ़ा** और **मांद** अगले अध्याय में फिर से इकट्ठे मिलते हैं (38:40)।

आयत 9. ''दक्षिण दिशा से बवण्डर और उत्तर दिशा से जाड़ा आता है।'' अमेरिका की तरह निकट पूर्व में भी ऐसा ही होता है क्योंकि दोनों स्थानों का एक जैसे अक्षांश हैं। इस आयत का और अधिक अक्षरश: अनुवाद यह है: ''*इसका कोठरी* में से बवण्डर आता है और *बिखेरनेहारे* से जाड़ा आता है'' (देखें NIV; NRSV; NLT)। ''कोठरी'' (*cheder, चेडेर*) शब्द प्रतीकात्मक रूप में वह स्थान है जहां हवा को जमा किया गया है (भजन संहिता 135:7; यिर्मयाह 10:13; 51:16; देखें अय्यूब 38:22)। यह शब्द 9:9 के वाक्यांश में दक्षिण के नक्षत्रों में भी मिलता है। उसके शायद दक्षिणी आकाश के तारामण्डल का स्थान है।[5] अनुवाद हुए शब्द ''बिखरने हारो,'' *m^{e}zarim* (*मेज़ारिम*), को कुछ लोगों द्वारा संज्ञा शब्द *mazzaroth* (*मेज़ोरथ*) का अलग रूप माना जाता है जिसका अर्थ ''राशियां'' हैं (NJPSV; देखें 38:32)। परन्तु मेज़ारिम को आम तौर पर क्रिया शब्द *zarah* (*ज़रह*) के एक रूप में मिलाया

जाता है, जिसका अर्थ ''बिखेरना'' है और जिसका अर्थ वायु के साथ जोड़ा जाता है। NRSV में ''बिखरने वाली हवाएं'' हैं जो सम्भवतया उत्तर की ओर से आने वाली हवा को दर्शाता है।[6]

आयत 10. ठण्डी हवा को **परमेश्वर की श्वास** के रूप में दिखाया गया है। हव्वा का दबाव जब बहुत कम हो जाता है तो **जलाशयों का पानी जम** कर **बर्फ** बन जाता है। भजनकार ने लिखा है,

> वह पृथ्वी पर अपनी आज्ञा का प्रचार करता है, उसका वचन अति वेग से दौड़ता है। वह ऊन के समान हिम को गिराता है, और राख की नाईं पाला बिखेरता है। वह बर्फ के टुकड़े गिराता है, उसकी की हुई ठण्ड को कौन सह सकता है? वह आज्ञा देकर उन्हें गलाता है; वह वायु बहाता है, तब जल बहने लगता है (भजन संहिता 147:15-18)।

आयत 11. पानी के भाप बनने और वर्षा के बादलों के इकट्ठा होने की प्रक्रिया पर हमने पिछले अध्याय में चर्चा की थी (पर टिप्पणियां देखें 36:27-30)। रॉबर्ट एल. आल्डन ने लिखा है, '''बिजली' शब्द पहली बार 36:30 में मिलता है और फिर पूरे हवाले में गरजन, गूंज और शोर के साथ मिलता है (36:29-30, 32-33; 37:2-5)।''[7]

आयत 12. परमेश्वर तूफ़ानी बादलों को जिधर चाहे भेज देता है और यह सब **उसकी बुद्धि की युक्ति** और उसकी **आज्ञा** से होता है।

आयत 13. एलीहू ने परमेश्वर की महानता तथा न्याय के सम्बन्ध में अपनी मुख्य बात पर लौटते हुए इस भाग को समाप्त किया। परमेश्वर **ताड़ना देने के लिए** अपने तूफ़ानों का इस्तेमाल करता है। कई अवसरों पर उसने दुष्टों को दण्ड देने के लिए वर्षा और ओलों का इस्तेमाल किया (उत्पत्ति 6:17; निर्गमन 9:18; यहोशू 10:11)। *Shebet* (*शेबेत*) जिसका इस्तेमाल ''ताड़ना'' हुआ है का इस्तेमाल आम तौर पर दण्ड या अनुशासन के लिए इस्तेमाल किए जाने वाली ''वास्तविक छड़ी'' के लिए होता है (9:34; 21:9; नीतिवचन 10:13; 22:15; 23:13, 14; 26:3; 29:15)।

इसके अलावा परमेश्वर वर्षा का इस्तेमाल **अपनी पृथ्वी की भलाई के लिए** करता है। ''पृथ्वी,'' *'erets* (*रेट्स*), (KJV; ASV; NRSV) और ''भूमि'' भी हो सकता है (TEV; NIV; NCV)। बिना वर्षा के भूमि सूख जाती है और वनस्पति सूख जाती है जिससे पौधे, पशु तथा अंत में मनुष्य मर जाते हैं। इसलिए वर्षा की आशीष भी मनुष्यों के प्रति परमेश्वर की **करुणा** के कारण (*chesed, चेसेड*) ही है (1 राजाओं 8:36; 18:45; यिर्मयाह 5:24; प्रेरितों 14:17)।

अय्यूब से निजी अपील (37:14-20)

[14]''हे अय्यूब! इस पर कान लगा और सुन ले; चुपचाप खड़ा रह, और परमेश्वर के आश्चर्यकर्मों पर विचार कर। [15]क्या तू जानता है, कि परमेश्वर कैसे अपने बादलों को आज्ञा देता, और अपने बादल की बिजली को चमकाता है? [16]क्या तू घटाओं का तौलना, या सर्वज्ञानी के आश्चर्यकर्म जानता है? [17]जब पृथ्वी पर दक्षिणी हवा के कारण सन्नाटा रहता है, जब पृथ्वी दक्षिण ही से चुपचाप होती है, तब तेरे वस्त्र क्यों गर्म हो जाते हैं? [18]फिर

क्या तू उसके साथ आकाशमण्डल को तान सकता है, जो ढाले हुए दर्पण के तुल्य दृढ़ है?
[19]तू हमें यह सिखा कि उससे क्या कहना चाहिये? क्योंकि हम अन्धियारे के कारण अपना
व्याख्यान ठीक से नहीं रच सकते। [20]क्या उसको बताया जाए कि मैं बोलना चाहता हूँ?
क्या कोई अपना सत्यानाश चाहता है?''

आयत 14. अय्यूब से **परमेश्वर के आश्चर्यकर्मों** के उसके तर्कों पर ध्यान देने के लिए एलीहू ने अय्यूब से व्यक्तिगत अपील करते हुए अपने भाषण को समाप्त किया। एलीहू के भाषणों में अय्यूब का सीधा संदर्भ अंतिम बार मिलता है (पर टिप्पणियां देखें 33:1)। आल्डन ने लिखा है:

> आयत 14 की दूसरी पंक्ति शायद एलीहू की सबसे महत्वपूर्ण बात है और यह वह बात है जिसे अंत में अय्यूब को मानना पड़ा। अंत में यह उसकी समस्या का समाधान और उसकी तकलीफ़ों का चाहे वह शारीरिक हों या भावनात्मक सोच का, सब का फल था।[8]

आयत 15. एलीहू ने अय्यूब को पूछा *कि* **परमेश्वर कैसे बादलों को आज्ञा देता है** और **बिजली को चमकाता है**। इन तथा अगले अलंकारिक प्रश्नों का उत्तर यह है कि ''नहीं।'' यह भ प्रश्न उन सभी प्रश्नों का पूर्वानुमान थे जो अध्याय 38 से 41 में परमेश्वर ने अय्यूब से पूछे।

आयतें 16, 17. इसके अलावा एलीहू ने अय्यूब को परमेश्वर से अलग बताया, जो **सर्वज्ञानी** है। मजे की बात यह है कि एलीहू ने यही बात पहले अपने लिए कही थी (36:4)। स्पष्टतया अय्यूब को इस बात की पूरी समझ नहीं थी कि आकाश में **घटाओं का तौलना** क्या है और न ही मौसम पर उसका नियन्त्रण था।

एलीहू ने अय्यूब के **वस्त्र गर्म** होने की बात की। मेरविन एच. पोप बताता है, ''रेगिस्तान से आने वाली गर्म हवा से व्यक्ति को लगता है कि जैसे उसके कपड़ों में उसका दन गुट रहा हो।''[9] **दक्षिणी हवा** के कारण **पृथ्वी पर** सन्नाटा छा जाना था। पशुओं के झुण्ड और समूह भी बड़ी चटानों तथा गुफ़ाओं में छिप पाते, जबकि काम करने वाले अपने दरवाजे खिड़कियां बंद करके अपने घरों में आराम करने के लिए खेतों से चले जाते। आल्डन ने लिखा है, ''रेतिली गर्म हवा आम तौर पर पूर्व से आती थी पर यह पश्चिम से भी आ सकती थी (तुलना 15:2; 27:21; लूका 12:55)।''[10]

आयत 18. ''फिर क्या तू उसके साथ आकाशमण्डल को तान सकता है, जो ढाले हुए दर्पण के तुल्य दृढ़ है?'' क्रिया शब्द ''तान'' (*raqa', राक़ा*) का अनुवाद ''आग में कूट'' (NEB) भी हो सकता है। यह शब्द उन संदर्भों में मिलता है जहां धातु के कारीगर पीतल या चांदी के पत्रों को कूटते थे (निर्गमन 39:3; गिनती 16:39 [17:4]; यिर्मयाह 10:9)। ''आकाशमण्डल'' फिर ''डाले हुए दर्पण'' की सामर्थ जैसा है। प्राचीनकाल में दर्पण आम तौर पर पीतल के बनाए जाते थे (निर्गमन 38:8),[11] वह धातु जिसकी तुलना सूखे के दौरान आकाश से की गई है (व्यवस्थाविवरण 28:23, 24)।

आयत 19. व्यंग्य का इस्तेमाल करते हुए एलीहू ने अय्यूब से उसे और मित्रों को यह **सिखा**ने को कहा कि परमेश्वर से क्या **कहना** है। अय्यूब को प्रकृति में परमेश्वर के कामों की समझ नहीं थी इसलिए वह यह समझ के होने की चुनौती नहीं दे सकता था कि परमेश्वर उसके

अपने जीवन में काम कर रहा है। अय्यूब के लिए परमेश्वर के सामने **अपना व्याख्यान** करने का कोई फ़ायदा नहीं था (13:18; 23:4; 35:14; देखें 32:14; 33:5)। अय्यूब की पुस्तक में **अंधियारे** को जहां आम तौर पर शोक तथा मृत्यु के साथ जोड़ा गया है, वहीं यहां पर इसका अर्थ अज्ञानता है (देखें 38:2)।

आयत 20. ''क्या उसको बताया जाए कि मैं बोलना चाहता हूँ? क्या कोई अपना सत्यानाश चाहता है?'' इन अलंकारिक प्रश्नों का उत्तर ज़ोर देकर ''नहीं!'' है। एलीहू इस डर के कारण कि कहीं ''उसे खा न लिया जाए'' परमेश्वर से सीधे बात करने से डरता था। हार्टले ने बताया है, ''परमेश्वर ने ऐसे प्रतिवादी के तर्कों को आसानी से हरा देना था और उस व्यक्ति के विरुद्ध कड़ा निर्णय लेना था।''[12] एलीहू यह दावा कर रहा था कि उसे अय्यूब से बढ़कर समझ थी और उसने परमेश्वर को चुनौती नहीं देनी थी।

परमेश्वर की अद्‌भुत महिमा (37:21-24)

21''अभी तो आकाशमण्डल में का बड़ा प्रकाश देखा नहीं जाता जब वायु चलकर उसको शुद्ध करती है। 22उत्तर दिशा से सुनहली ज्योति आती है परमेश्वर भययोग्य तेज से विभूषित है। 23सर्वशक्तिमान जो अति सामर्थी है, और जिसका भेद हम पा नहीं सकते, वह न्याय और पूर्ण धर्म को छोड़ अत्याचार नहीं कर सकता। 24इसी कारण सज्जन उसका भय मानते हैं; और जो अपनी दृष्टि में बुद्धिमान हैं, उन पर वह दृष्टि नहीं करता।''

आयतें 21, 22. इन आयतों के सम्बन्ध में एच. एच. रोअले ने कहा है:

> इसका अर्थ यह प्रतीत होता है कि जब हवा बादलों को उड़ा ले जाती है तो आसमान आंखों को चुभता है। इसका मतलब है कि कहने का मतलब यह है कि यदि साफ आसमान मानीवय आंखों के लिए इतना चमकदार है तो परमेश्वर की उपस्थिति की चुंदियाने वाली चमक इससे भी कहीं बढ़कर असहनीय होगी।[13]

परमेश्वर की **सुनहली ज्योति** को **उत्तर दिशा से** आने वाली के रूप में दिखाया गया है (26:7 पर टिप्पणियां देखें)।

आयत 23. एलीहू ने अपने भाषण का समापन एक अंगीकार करते हुए किया: **''सर्वशक्तिमान जो अति सामर्थी है, और जिसका भेद हम पा नहीं सकते, वह न्याय और पूर्ण धर्म को छोड़ अत्याचार नहीं कर सकता।''** परमेश्वर के बारे में पांच बुनियादी दावे किए गए हैं (1) वह आगम्य है, (2) वह सामर्थी है, (3) वह अत्याचार करने के लिए हिंसा का इस्तेमाल नहीं करता, (4) वह न्यायी है और (5) वह धर्मी है।[14]

आयत 24. परमेश्वर के स्वभाव पर आधारित एलीहू ने दूसरों को **उसका भय** मानने की सलाह दी (28:28 पर टिप्पणियां देखें)। यह शिक्षा सभोपदेशक के निष्कर्ष के जैसी ही है, ''परमेश्वर का भय मान और उसकी आज्ञाओं का पालन कर'' (सभोपदेशक 12:13)।

''जो अपनी दृष्टि में बुद्धिमान हैं, उन पर वह दृष्टि नहीं करता।'' इस कथन का अर्थ अस्पष्ट है। कुछ संस्करणों में ''दृष्टि में बुद्धिमान'' वाक्यांश की व्याख्या नकारात्मक ढंग से

की गई है। NRSV में कहा गया है कि परमेश्वर ''अपने ही अहंकार में समझदार किसी भी व्यक्ति की परवाह नहीं करता।'' और लोग इब्रानी वचन की ओर फिर से ध्यान दिलाते हुए इसे सकारात्मक बनाते हैं। NEB में है ''जितने बुद्धिमान हैं वे से उसकी ओर देखते हैं।''

प्रासंगिकता

यहोवा की जबर्दस्त सामर्थ (37:1-13)

अय्यूब 37:1-13 वाले तूफ़ान के एलीहू के विवरण के द्वारा परमेश्वर की जबर्दस्त शक्ति को पकड़ा गया है। पूरे आसमान में गूंजने वाली उसकी आवाज़ को गड़गड़ाहट भरी गूंज को बताया गया, जो पृथ्वी को हिला सकती है। बिजली की चमक के साथ गर्जन से आदमी की छाती में उसका दिल उछलने लगता है (37:1-5)। बादल के गर्जने से हम सब डरते हैं। यह चाहे भयभीत कर देने वाला हो सकता है पर तूफ़ान भय पैदा करके हमारे मनों में परमेश्वर की आराधना करने के लिए उकसाता है। बादल की गरज, बिजली की चमक, बारिश तथा हवा में उसकी ज़बर्दस्त सामर्थ देखकर हम उसकी महिमा किए बिना नहीं रह सकते।

परमेश्वर के शब्द की सामर्थ इस तथ्य से स्पष्ट है कि बर्फ और बारिश उसकी बात मानकर चलते हैं (37:6-12)। परमेश्वर की एक अद्‌भुत खूबी जो उसे सृष्टि से अलग करती है, वह केवल बोलकर चीज़ें करवाने की उसकी क्षमता है। यह बात सृष्टि के विवरण में पता चलती है कि जहां वचन बार बार कहता है कि परमेश्वर के विवरण में, ''फिर परमेश्वर ने कहा ...'' और हो गया (उत्पत्ति 1)। इब्रानियों की पुस्तक हमें याद दिलाती है कि हमें ''विश्वास ही से हम जान जाते हैं कि सारी सृष्टि की रचना परमेश्वर के वचन के द्वारा हुई है। पर यह नहीं कि जो कुछ देखने में आता है, वह देखी हुई वस्तुओं से बना हो'' (इब्रानियों 11:3)। परमेश्वर के एक शब्द में इतनी शक्ति है जितनी संसार के सब लोगों को मिलाकर उनके शब्दों में भी नहीं है। वह सचमुच में सर्वशक्तिमान है!

परमेश्वर का बर्फ और बारिश को भेजना हमें याद दिलाता है कि हमारे जीवनों पर हमारा अपना नियन्त्रण नहीं है। एलीहू ने कहा, ''वह सब मनुष्यों के हाथ पर मुहर कर देता है, जिस से उसके बनाए हुए सब मनुष्य उसको पहचानें'' (37:7)। यह जवान कह रहा था कि परमेश्वर लोगों के मनों में अपनी शक्ति और शान को बताने के लिए तूफ़ानों का इस्तेमाल करता है। बर्फ और बारिश के कारण अय्यूब के समय में खेतों में अपने काम छोड़कर घरों में चले जाते होंगे। आज मौसम के कारण हम अपनी योजनाओं को बदल लेते हैं या फुटबाल जैसी खेलों के कार्यक्रमों को टाल दिया जाता है। पिकनिक बंद दरवाजों में की जाती है। बाड़ा लगाने का काम किसी और दिल के लिए छोड़ दिया जाता है। हमारे कार्यक्रमों में यह बदलाव चाहे कई बार परेशान करने वाले तो होते हैं पर वे हमें याद दिलाने वाले भी होने चाहिए कि अंत में नियन्त्रण परमेश्वर के हाथ में है। वह सर्वशक्तिमान है और हमें उसकी महिमा करनी चाहिए।

इस भाग की अंतिम तीन आयतें यह बताती हैं कि परमेश्वर तूफ़ानों को क्यों भेजता है (37:13)। (1) यह ''ताड़ना देने के लिए'' हो सकता है। आम तौर पर आज जहां लोग परमेश्वर को मौसम से अलग कर देते हैं वहीं कई बार वह हमारा ध्यान खींचने और हमें मन

फिराने में अगुआई करने के लिए कई बार तूफ़ानों का इस्तेमाल करता है। (2) यह ''पृथ्वी की भलाई के लिए'' हो सकता है। पौधों, जीव जंतुओं तथा मनुष्य जीवन के लिए नमी आवश्यक होती है। (3) यह ''करुणा करने के लिए'' हो सकता है। अपनी सृष्टि के साथ परमेश्वर की वफ़ादारी का पता चलता है जब वह इसके लिए इंतज़ाम करना जारी रखता है। हम कितने अच्छे और प्रेमी परमेश्वर की सेवा करते हैं। डी. स्टिवर्ट

टिप्पणियां

[1]होमेर हेली, *ए कॉमेंट्री ऑन अय्यूब* (पृष्ठ नहीं: रिलिजियस सप्लाई, Inc., 1994), 321. [2]ऐल्बर्ट बार्नस, *अय्यूब,* नॉटस ऑन द ओल्ड टैस्टामैंट, सम्पा. रॉबर्ट फ्रू (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: बेकर बुक हाउस, 1950), 2:178. [3]जॉन ई. हार्टले, *द बुक ऑफ़ अय्यूब,* द न्यू इंटरनेशनल कॉमेंट्री ऑन द ओल्ड टैस्टामैंट (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1988), 480. [4]विलियम डी. रेबर्न, *ए हैंडबुक ऑन द बुक ऑफ़ अय्यूब* (न्यू यॉर्क: यूनाइटेड बाइबल सोसायटीस, 1992), 681. [5]हार्टले, 172. [6]मेरविन एच. पोप, *अय्यूब,* द एंकर बाइबल, अंक 15 (गार्डन सिटी, न्यू यॉर्क: डबलडे ऐंड कंपनी, Inc., 1965), 242. [7]रॉबर्ट एल. आल्डन, *अय्यूब,* द न्यू अमेरिकन कॉमेंट्री (पृष्ठ नहीं: ब्रॉडमैन ऐंड होल्मन पब्लिशर्स, 1993), 361. [8]वहीं, 362. [9]पोप, 244. [10]आल्डन, 363.

[11]*द इंटरनेशनल स्टैंडर्ड बाइबल इन्साइक्लोपीडिया,* अनु. व सम्पा, ज्योफ्री डब्ल्यू. ब्रोमिले (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1986), 3:382 में फ्रैड्रिक डब्ल्यू. डैंकर, मिस्र के मिरर में एक-एक पीतल के दर्पण का चित्र देखें। [12]हार्टले, 483. [13]एच. एच. रोअले, *अय्यूब,* द सेंचुरी बाइबल, न्यू सीरीज़ (ग्रीनवुड, दक्षिण कैरोलिना: द अटिक प्रैस, Inc., 1970), 307. [14]आल्डन, 365.